हिन्दी भाषा की कहानी

राजेश कुमार नेमा
वरिष्ठ शोध सहायक,
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है, वह किसी व्यक्ति की कृति नहीं, यही मान्यता है। भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु "भाष्" से मानी जाती है, जिसका अर्थ है - अभिव्यक्त अर्थात् वाणी में कुछ कहना किन्तु वाणी निरर्थक भी हो सकती है इस कारण कुछ भाषा विज्ञानियों ने भाषा के अर्थ को परिष्कृत करके यह कहा है कि भाषा व्यक्त वाणी का वह भाव व्यंजक रूप है जिसका कुछ अर्थ भी निकलता हो। भाषा निरर्थक ध्वनियों का समूह नहीं हो सकती क्योंकि भाषा समाज के मौखिक व्यवहार का माध्यम होती है। इस कारण उसका व्यवहार समाज सापेक्ष होता है। भाषा सामाजिक प्रक्रिया इस रूप में है कि मानव की एक पीढ़ी द्वारा अपनाई गई भाषा, पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती है। इस तरह एक समयान्तराल के बाद भाषा के मूल रूप में कुछ न कुछ परिवर्तन होता ही रहता है।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में कुछ संस्कृत विद्वानों का मानना है कि हिन्दी शब्द संस्कृत के 'इन्द' शब्द से बना है जिसका अर्थ है -ऐश्वर्य होना। कुछ प्राचीन परम्परावादी हिन्दू धर्मावलम्बी मानते हैं कि हिन्दी शब्द "हीन+द" का परिष्कृत रूप है, जिसका अर्थ है - **हीनता का दमन करने वाला** किन्तु व्याकरण एवं व्युत्पत्ति की दृष्टि से तर्को की यह मान्यता खरी नहीं उतरती।

वैसे भाषा के रूप में हिन्दी शब्द का प्रयोग अरबी तथा फारसी भाषाओं से ही शुरू हुआ। छठी शताब्दी के पहले से ही ईरान में भारतीय भाषाओं के लिये "जबान ए हिन्द" शब्द का प्रयोग होने लगा था। इसके कई प्रमाण प्राचीन ईरानी ग्रंथो में भी मिलते हैं। भारतीय समाज में 'हिन्दी' का प्रयोग भाषा के अर्थ में मुसलमानों ने प्रारम्भ किये। मुसलमान भारत में जब आये तो उनका सम्पर्क प्रारंभ में पश्चिमोत्तर भारत से हुआ। फिर वे मध्य क्षेत्र से संबंधित हुये। सम्भवतः उन्होंने इसी मध्य देशी भाषा को "जबान-ए-हिन्दी" नाम दिया जो कालान्तर में केवल 'हिन्दी' ही रह गया। भारत में सर्वप्रथम अमीर खुसरो ने 'हिन्दी' शब्द

का प्रयोग भाषा के अर्थ में किया था। उन्होंने कई स्थानों पर 'हिन्दवी' या 'हिन्दुई' का प्रयोग किया। इसी 'हिन्दवी', 'हिन्दुई' शब्द से 'हिन्दी- शब्द का प्रादुर्भाव हुआ।

हिन्दी भाषा के इतिहास का काल निर्धारण करते हुए विद्वानों ने बताया है कि हिन्दी भाषा की शुरूआत सन् 700 के आस-पास हुई थी। विद्वानों ने हिन्दी भाषा की विकास यात्रा के काल को चार भागों में बॉटा है -

(1) आदि काल:

विद्वानों ने हिन्दी भाषा के विकास के आदिकाल की सीमा सन् 700 से 1300 ई. तक मानी है। इस काल में हिन्दी अपभ्रंश, डिंगल तथा पिंगल रूप में मिलती है। वस्तुतः इस काल को पाली-प्राकृत तथा अपभ्रंश का समापन-सोपान भी कहा जाता है। डा. धीरेन्द्र वर्मा ने इस काल की भाषा को स्पष्टतया चार रूपों में दर्शाया है।

(अ) शिलालेख, ताम्रपत्र, तथा प्राचीन पत्र

(ब) अपभ्रंश साहित्य

(स) चारण काव्य तथा

(द) हिन्दवी अथवा पुरानी हिन्दी का साहित्य

इस काल की प्रमुख रचनाएं परिमाल रासो, हमीर रासो, पृथ्वीराज रासो आदि हैं।

(2) संक्रांति काल:

भाषा विज्ञानियों ने इस काल का समय निर्धारण सन् 1300 ई. से 1500 ई. तक माना है। इस काल के प्रारभिक कवि हेमचन्द हैं एवं अंतिम काव्य धारा मध्युगीन है। मुस्लिम आक्रमणकारियों के कारण भारतवासी कुंठित जीवन जी रहे थे, ऐसे में भक्तियुगीन चेतना का प्रादुर्भाव भी हो रहा था। अतः इस काल में भाषा अपभ्रंश रूप का पूर्णतया परित्याग कर चुकी थी। फिर भी इस काल की भाषा पर शेर सेनी अपभ्रंश का प्रभाव परिलक्षित होता है। इस काल की प्रमुख रचनाएं -कीर्तिलता, संदेशरासक प्राकृत पेगलम् उक्ति-व्यक्ति प्रकरण, वर्ण रत्नाकर, पुरातन संग्रह आदि हैं।

(3) मध्यकाल:

इस काल की अवधि सन् 1500 ई. से 1800 ई. तक मानी जाती है। इस काल तक हिन्दी की पूर्ववर्ती आदिकालीन भाषा रूपों का पूर्णतया परिवर्तन हो गया था। इस युग की प्रमुख भाषाएं - अवधी तथा बृज भाषा थी। अवधी भाषा का प्रादुर्भाव अर्द्धमागधी, अपभ्रंश से हुआ तो बृजभाषा का शेरसेनी प्राकृत अपभ्रंश से हुआ। इस काल के प्रारंभिक समय से भक्त कवियों यथा कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा आदि की उत्कृष्ट रचनाएं परिवर्ती काल में मिलती हैं तथा रीतिकालीन कवियों यथा- देव, बिहारी आदि की बेहतरीन रचनाएं मिलती है।

(4) आधुनिक काल:

इस काल की अवधि सन् 1800 ई. से आधुनिक समय तक मानी जाती हैं। हिन्दी भाषा के इस युग में गद्य रूप का विकास हुआ। इस समय हिन्दी खड़ी बोली का स्वरूप धारण करने लगी थी परन्तु उर्दु शब्दों की बहुलता के कारण इसमें पेनापन नहीं आ पाया।

कालान्तर में जब भारतेन्दु का उदय हिन्दी के क्षितिज पर हुआ तो हिन्दी के विकास की गतिमान धारा बह निकली। भारतेन्दु ने अपनी लेखकीय फोज के सहयोग से हिन्दी भाषा ही नहीं, साहित्य को भी समृद्ध किया। इस काल की हिन्दी ने भारतीय आर्य भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, अरबी, द्रविड़ भाषाओं के अनेक शब्दों को सहृदयता से ग्रहण किया।

इसके बाद वाले समय यानी 19 वीं सदी की अंतिम बेला से लेकर 20 वीं सदी के दूसरे दशक तक हिन्दी भाषा का विकास चमरावस्था तक पहुँच गया। पं. कामता प्रसाद गुरू, प्रताप नारायण मिश्र तथा महावीर प्रसार द्विवेदी ने हिन्दी भाषा को एक स्पष्ट एवं परिमार्जित व्याकरण तो प्रदान किया ही, हिन्दी साहित्य के विकास को भी गति प्रदान की।

प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नई कहानी, अकविता जैसे साहित्यिक आंदोलनों के दौर ने इसे अन्य विदेशी भाषाओं से परिचित कराया एवं शब्दों के सृजन से हिन्दी भाषा को समृद्ध किया।

* * *